तृतीय अध्याय

पारिवारिक एवं वैवाहिक पृष्ठभूमि

भारतीय सामाजिक संरचना में व्यक्ति एवं उसके क्रिया–कलापों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति किसी क्रिया–कलापों को सम्पादित करता है तो उसके पीछे कुछ न कुछ उद्देश्य निहित होता है। जैसे जीविकोपार्जन की समस्या का समाधान करने हेतु उसे अर्थोपार्जन की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिये वह अपने सामाजिक परिवेश में किसी न किसी प्रकार का पेशा अथवा व्यवसाय को संचालित करता है ताकि उसकी मौलिक आवश्यकताओं आवास, जीवन निर्वाह तथा रहन–सहन के स्तर में सुधार हो सके। इस वैचारिकी के तरह मानव अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा प्रयासों के अनुरुप रोजगार को अपनाता है। नौकरी करने में जहाँ आर्थिक स्थिति सुधार होने से घरेलू वातावरण में परिवर्तन हो रहा है वहीं कुछ महिलाओं को गरीबी के कारण छोटे बच्चों को बेसहारा छोड़कर नौकरी करने से वे विघटित हो रही हैं। उनको समय न देने के कारण व उनकी देखभाल न होने के कारण वह गलत आदतों के शिकार हो रहे हैं कुछ परिवारों में महिलायें कार्य में होते हुए भी अच्छा पारिवारिक समायोजन बनाये रखती हैं। अतः निष्कर्ष कहा जा सकता है कि जहाँ एक ओर नौकरी करने से महिलाओं की पारिवारिक स्थिति में सुधार हुआ है वही दूसरी तरप यह भी ॰ष्टिगोचर हो रहा है कि उनके बच्चों का समाजीकरण, उचित ढंग से नहीं हो पा रहा है। प लतः ऐसी स्थितिमें बाल भगेड़ूपन, आवारापन एवं बालकों का असन्तुलित विकास के साथ ही साथ कहीं–कहीं पारिवारिक कलह, अशान्ति एवं घरेलू झगड़ों की मात्रा में दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती जारही है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि नौकरी करने में

महिलाओं के पारिवारिक जीवन में असन्तुलन उत्पन्न हुआ है, किन्तु धीरे–धीरे यथास्थिति बदल रही है।

पारिवारिक स्थिति

परिवार मानव की प्रथम पाठशाला रही है। व्यक्ति के जीवन पर उसके परिवार की अमिट छाप होती है। व्यक्ति के सामाजीकरण में यदि कोई संस्था आधारशिला की भूमिका निभाती है तो वह है परिवार। संतुलित परिवार में संतुलित व्यक्तित्व का विकास होता है साथ ही वह व्यक्तित्व भविष्य में भी संतुलित रहता है। जिसके परिणामस्वरुप समाज का संतुलन सम्भव होता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसक समाज में रहने के लिये परिवार के विभिन्न क्रिया–कलापों में भाग लेना अतिआवश्यक होता है। परिवार में अपने सदस्यों को विभिन्न परिस्थितियों से समायोजन करना भी सिखाता है। मानव जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव आते रहते हैं उसे अनुक परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। ऐसी स्थिति में परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति परिवार के सदस्यों का मार्गदर्शन करते हैं। अर्थात् वयोवृद्ध व्यक्ति द्वारा बताये गये अच्छे मार्गों को परिवार के अन्य सदस्यगण अपनाते हैं और समाज के नियमों के अन्तर्गत ही उसकी समस्या का समाधान भी खोजते हैं।

सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का एक महत्त्वपूर्ण परिवर्त्य परिवार का स्वरुप है। भारतीय समाज में यद्यनपि परम्परागत रुप से संयुक्त एवं विस्तृत परिवारों का अस्तित्व रहा है तथापि आधुनिक काल में एकाकी और सीमित परिवारों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। आधुनिक जीवन में आर्थिक परिस्थितियाँ, पारिवारिक संगठन को प्रभावित करने वाले एक महत्त्वपूर्ण तथ्य बन गये हैं परिवार के सदस्यों का विभिन्न स्थानों पर व्यवसाय करना, आय का सीमित होना, व्यक्तिवादी मनोवृत्ति एवं स्वतन्त्रता की भावना ने सीमित परिवार की वृद्धि में प्रोत्साहन दिया है। संयुक्त

परिवार आधुनिक नगरीय जीवन आर्थिक परिस्थितियों के दबाव में निरन्तर महत्त्वहीन होता जा रहा है।1

भारतीय ग्रामीण समाज में परिवार का संयुक्त स्वरुप ही सामान्य तौर पर देखा जाता है, लेकिन वर्तमान समय में यह देखा गया है कि भारतीय ग्रामीण समाज में परिवार का संयुक्त स्वरुप नहीं रह गया है। वह एकाकी स्वरुप को ग्रहण करता चला जा रहा है, "एकांकी परिवार, उस परिवार को कहा जाता है जिस परिवार में पति–पत्नी तथा बच्चे निवास करते हैं।" "एक संयुक्त परिवार उन व्यक्तियों का एक समूह जो साधारणतया एक मकान में रहते है, जो एक रसोई में बना भोजन करते हैं, जो सामान्य सम्पत्ति के स्वामी होते हैं और जो सामान्य उपासना में भाग लेते हैं तथा जो किसी न किसी प्रकार एक–दूसरे के रक्त सम्बन्धी हैं।"2

आधुनिकीरण ने पारिवारिक, सामाजिक संरचना उसके मूल्यों, रीति–रिवाजों, परम्पराओं क्रियाओं आदि को प्रभावित किया है। इससे परिवार एवं समाज की निर्माणक इकाईयों की पद, स्थिति एवं भूमिका निर्वाह स्वरुप पर प्रभाव पड़ा है। दूबे ने परिवार को निवास अधिकार, उत्तराधिकार, वंश नाम तथा वैवाहिक रचना और गठन के आधार पर कई भागों में वर्गीकृत किया है।3 किन्तु इसके अतिरिक्त भी विवाह, सदस्यों की संख्या तथा पीढ़ियों के एक साथ रहने न रहने के आधार पर परिवार को अकेले, अुण तथा संयुक्त स्वरुपों में वर्णित किया जा सकता है। सिंह के अनुसार– "परम्परागत संस्थाओं में विवेकपूर्ण एवं आधुनिक प्रकार्य भी जुड़े रहते हैं।"4

आयु समूह

समाजशास्त्रीय अध्ययनों में आयु का परिवर्तय एक महत्त्वपूर्ण परिवर्त्य है। आयु एक जैविकीय अवधारणा है जिसके द्वारा व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को काल के आयाम पर विभिन्न चरणों या अवस्थाओं में बाँटा जाता है। जैविकीय ृष्टि से आयु व्यक्ति के शारीरिक विकास एवं परिपक्वता की प्रक्रिया को प्रदर्शित करती है। सामाजिक–सांस्कृतिक ृष्टि से आयु का परिवर्त्य विशेष महत्त्व रखता है। आदिम समाज से लेकर आधुनिक जटिल समाज तक व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और भूमिका निर्धारण का एक प्रमुख आधार आयु रहा है। मानव समाज में श्रम विभाजन का प्रारम्भिक आधार आयु रहा है। बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था में व्यक्ति को अलग–अलग सामाजिक स्थिति, अधिकार, उत्तरदायित्व, सुविधा एवं सत्ता प्राप्त होती है। अधिकतर समाजों में वृद्ध व्यक्ति को अत्याधिक सम्मान एवं विशेषाधिकार प्राप्त है? क्योंकि यह इस देश की संस्कृति रही है। कुछ परम्परागत समाजों में वृद्धों के शासन की व्यवस्था रही है। यद्यनपि आधुनिक जटिल समाजों में अनेक नवीन सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों, मूल्यों के संघर्ष और पीढ़ियों के टकराव के कारण वृद्ध व्यक्ति के उच्च सामाजिक स्थिति का ह्रास भी हुआ है युवा व्यक्ति की सामाजिक स्थिति निरन्तर महत्त्वपूर्ण होती जा रही है तथा आयु व्यक्ति के सामाजिक स्थिति और भूमिका के निर्धारण में कभी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। आयु की परिपक्वता सामाजिक अनुभव वृद्धि का प्रतीक है। आयु की वृद्धि के साथ–साथ व्यक्ति को जो नवीन ज्ञान और अनुभव प्राप्त होता है उससे व्यक्ति का व्यवहार, निर्णय एवं अभिवृत्तियाँ प्रभावित होती हैं। अनुभव की परिपक्वता व्यक्ति को विशेष शक्ति भी प्रदान करती है। सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में सहभागिता की प्रक्रिया भी आयु के परिवर्त्य से प्रत्यक्ष रुप से सम्बन्धित है। सामान्यतः युवा व्यक्ति को विशेष शक्ति भी प्रदान करती है, युवा व्यक्ति राजनीतिक रुप से भी अधिक सक्रिय होता है।

सारणी संख्या 3.1

उत्तरदाताओं की आयु संरचना का विवरण

क्र.सं.	आयु (वर्षों में)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	18–30	175	43.75
2	31–59	155	38.75
3	60–70	70	17.50
	योग	400	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या 3.1 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं की आयु संरचना में सर्वाधिक संख्या 43.75 प्रतिशत 18–30 वर्ष की आयु के उत्तरदाता हैं। 31–59 वर्ष आयु के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 38.75 है तथा सबसे कम 17.50 प्रतिशत उत्तरदाता 60–70 वर्ष के हैं सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं को तीन आयु वर्ग के समूहों में विभक्त किया गया है जिसमें 18–30 वर्ष, 31–59 वर्ष, 60–70 वर्ष के व्यक्ति हैं।

सारणी संख्या 3.2

परिवार का स्वरुप

क्र.सं.	परिवार का स्वरुप	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	एकाकी	250	62.50
2	संयुक्त	100	25.00

3 मिश्रित50 12.50

योग 400 100.00

उपर्युक्त सारणी संख्या 3.2 से स्पष्ट होता है कि वर्तमान अध्ययन के उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरुप का अध्ययन करते हुए यह बोध होता है कि 25. 00 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार से सम्बन्धित है, जबकि 62.50 प्रतिशत एकाकी परिवार के सदस्य हैं और 12.50 प्रशित उत्तरदाता मिश्रित परिवार के हैं। यद्यनपि अध्ययन के निर्देश के लगभग एक तिहाई भाग के उत्तरदाताओं का सम्बन्ध एकाकी परिवार से है तथापि यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि संयुक्त परिवारों की संख्या में अपेक्षाकृत कम वृद्धि हुई है। नगरीय जीवन शैली का प्रभाव कम ही पड़ा है आज भी इन ग्रामीण संस्कृति को बचाकर रखा है, अर्थात् यह शुभ संकेत माना जा सकता है, क्योंकि आज का समाज पूरी तरह से नगरीय संस्कृति का यूं कहें कि पूरी तरह से पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते हुए एकाकी परिवार व्यवस्था में बदलता जा रहा है, किन्तु यह अध्ययन ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित होने के कारण परिलक्षित होता है कि इन्होंने आज भी ग्रामीण संयुक्त परिवार की संस्कृति का अनुकरण करते हुए अपनी पूर्व संस्कृति को बचाकर रखा है।

प्रश्न 1 : क्या आप पारिवारिक मामलों में हस्तक्षेप को उचित मानते हैं?

सारणी संख्या 3.3 (क)

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 75 75.00 25 25.00 100

मुजार 65 65.00 35 35.00 100

छंगापुर 52 52.00 48 48.00 100

सरकी 48 48.00 52 52.00 100

योग 240 60.00 160 40.00 400

सारणी संख्या 3.3 (क) के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या वे पारिवारिक मामलों में स्वयं के हस्तक्षेप को उचित मानते हैं? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 75 (75.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 25 (25.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 65 (65.0 प्रतिशत) ने हाँ उत्तर दिया और 35 (35.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 52 (52.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 48 (48.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 48 (48.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 52 (52.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में से 240 उत्तरदाताओं ने स्वयं के हस्तक्षेप को स्वीकार करते हुए इसे उचित माना है जबकि 160 उत्तरदाताओं ने परिवार में स्वयं के हस्तक्षेप को अनुचित माना है। अतः अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अब धीरे–धीरे समाज में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है।

सारणी संख्या 3.3 (ख)

जाति परिवर्त्य

जाति हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

सामान्य	90	22.50	40	10.00	130
पिछड़ी जाति	80	20.00	50	12.50	130
अनु. जाति	76	19.00	64	16.00	140
योग	246	61.50	154	38.50	400

सारणी संख्या 3.3 (ख) के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे पारिवारिक मामलों में स्वयं के हस्तक्षेप को उचित मानते हैं? के क्रम जाति परिवर्त्य के आधार पर सामान्य जाति के सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में से 90 (22.5 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 40 (10.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि पिछड़ी जाति के 80 (20.00 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 50 (12.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा अनुसूचित जाति के सम्पूर्ण 140 उत्तरदाताओं में से 76 (19.00 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 64 (16.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में से 246 उत्तरदाताओं ने स्वयं के हस्तक्षेप को स्वीकार करते हुए इसे उचित माना है जबकि 154 उत्तरदाताओं ने परिवार में स्वयं के हस्तक्षेप को अनुचित माना है। अतः अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अब धीरे–धीरे समाज में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है।

सारणी संख्या 3.3 (ग)

शिक्षा परिवर्त्य

शिक्षा	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
उच्च शिक्षित	83	20.75	52	13.00	135

शिक्षित 100 25.00 30 7.50 130

अशिक्षित 52 13.00 83 20.75 135

योग 235 58.75 165 41.25 400

सारणी संख्या 3.3 (ग) के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या वे पारिवारिक मामलों में स्वयं के हस्तक्षेप को उचित मानते हैं? के क्रम में शिक्षा परिवर्त्य के आधार पर उच्च शिक्षित सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में से 83 (20.75 प्रतिशत) हाँ में उत्तर दिया और 52 (13.00 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। जबकि शिक्षित उत्तरदाताओं में से 100 (25.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 30 (7.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा अशिक्षित सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में से 52 (13.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 83 (20.75 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में से 235 उत्तरदाताओं ने स्वयं के हस्तक्षेप को स्वीकार करते हुए इसे उचित माना है जबकि 165 उत्तरदाताओं ने परिवार में स्वयं के हस्तक्षेप को अनुचित माना है। अतः अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मात्र अशिक्षित व्यक्ति ऐसे हैं जो आज भी अपने परिवार को ही तथा परिवार के सदस्यों को सर्वोच्च मानते हैं।

प्रश्न 2 : क्या पारिवारिक आमदनी से आपको लाभ है?

सारणी संख्या 3.4 (क)

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 68 68.00 32 32.00 100

मुजार 51 51.00 49 49.00 100

छंगापुर 43 43.00 57 57.00 100

सरकी 56 56.00 44 44.00 100

योग 218 54.50 182 45.50 400

सारणी संख्या 3.4 (क) के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि आपको पारिवारिक आमदनी से आपको लाभ है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 68 (68.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 32 (32.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 51 (51.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 49 (49.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 43 (43.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 57 (57.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 218 उत्तरदाताओं को परिवार से लाभ प्राप्त हो रहा है जबकि 182 उत्तरदाताओं को परिवार से लाभ नहीं मिल पा रहा है।

सारणी संख्या 3.4 (ख)

जाति परिवर्त्य

जाति हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

सामान्य	82	20.50	56	14.00	138
पिछड़ी जाति	68	17.00	80	20.00	148
अनु. जाति	52	13.00	62	15.50	114
योग	202	50.50	198	49.50	400

सारणी संख्या 3.4 (ख) के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे पारिवारिक आमदनी से स्वयं लाभ उठा पा रहे हैं? के क्रम जाति परिवर्त्य के आधार पर सामान्य जाति के सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में से 82 (20.50 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 56 (14.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि पिछड़ी जाति के 68 (17.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 80 (20.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा अनुसूचित जाति के उत्तरदाताओं में से 53 (13.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 62 (15.50 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में से 202 उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें पारिवारिक आमदनी से स्वयं को लाभ मिलता है जबकि 198 उत्तरदाताओं को पारिवारिक आमदनी से स्वयं को लाभ नहीं मिलता है।

सारणी संख्या 3.4 (ग)

शिक्षा परिवर्त्य

शिक्षा	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
उच्च शिक्षित	80	20.00	43	10.75	123
शिक्षित	101	25.25	26	6.50	127

अशिक्षित 67 16.75 83 20.75 150

योग 248 62.00 152 38.00 400

सारणी संख्या 3.4 (ग) के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या वे पारिवारिक आमदनी से स्वयं लाभ उठा पा रहे हैं? के क्रम में शिक्षा परिवर्त्य के आधार पर उच्च शिक्षित सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में से 80 (20.00 प्रतिशत) हाँ में उत्तर दिया और 43 (10.75 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। जबकि शिक्षित उत्तरदाताओं में से 101 (25.25 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 26 (6.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा अशिक्षित सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में से 67 (16.75 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 83 (20.75 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। इस प्रकार सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में से 248 उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें पारिवारिक आमदनी में स्वयं को लाभ मिलता हैं जबकि 152 उत्तरदाताओं को पारिवारिक आमदनी से स्वयं को लाभ नहीं मिलता है।

प्रश्न 3 : क्या परिवार में आपकी राय को स्थान मिलता है?

सारणी संख्या 3.5

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 45 45.00 55 55.00 100

मुजार 36 36.00 64 64.00 100

छंगापुर 41 41.00 59 59.00 100

सरकी 47 47.00 53 53.00 100

योग 169 42.25 231 57.75 400

सारणी संख्या 3.5 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या परिवार में आपकी राय को स्थान मिलता हैं? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 45 (45.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 55 (55.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। मुजार में

सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 36 (36.0 प्रतिशत) ने हाँ उत्तर दिया और 64 (64.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 41 (41.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 59 (59.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 47 (47.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 53 (53.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से यह निष्कर्ष मिलता है कि सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में से 169 व्यक्तियों को परिवार की राय में सहभागिता करने का अधिकार मिलता है जबकि 231 उत्तरदाताओं को इस प्रकार की परिस्थितियों में तिरस्कृत किया जाता है।

प्रश्न 4 : परिवार की उन्नति के प्रति उत्तरदाताओं के विचार?

सारणी संख्या 3.6

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 68 68.00 32 32.00 100

मुजार 74 74.00 26 26.00 100

छंगापुर 63 63.00 37 37.00 100

सरकी 69 69.00 31 31.00 100

योग 274 68.50 126 31.50 400

सारणी संख्या 3.6 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि परिवार की उन्नति के बारे में आपका विचार अच्छा है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 68 (68.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 32 (32.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 74 (74.0 प्रतिशत) ने हाँ उत्तर दिया और 26 (26.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 63 (63.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 37 (37.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 69 (69.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 31 (31.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक ग्राम के अधिकांश व्यक्तियों का परिवार की उन्नति के बारे में अच्छा विचार है।

प्रश्न 5 : परिवार के मुखिया के प्रति विचार

सारणी संख्या 3.7

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला	33	33.00	67	67.00	100
मुजार	39	39.00	61	61.00	100
छंगापुर	43	43.00	57	57.00	100
सरकी	56	56.00	44	44.00	100
योग	171	42.75	229	57.25	400

सारणी संख्या 3.7 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि परिवार के मुखिया के बारे में उनका विचार उचित है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 33 (33.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 67 (67.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 39 (39.0 प्रतिशत) ने हाँ उत्तर दिया जबकि 61 (61.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। इसी प्रकार छंगापुर में 43 (43.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 57 (57.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 171 उत्तरदाताओं का परिवार के मुखिया के प्रति अच्छा विचार है जबकि 229 उत्तरदाताओं का परिवार के मुखिया के प्रति अच्छा विचार नहीं है।

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

परम्परागत समाजों में विवाह व्यक्ति के आवासीय स्थिति निर्धारण का एक प्रमुख आधार रहा है। विवाह मानव समाज की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है, विवाह से केवल

परिवार का ही निर्माण नहीं होता वरन् इससे व्यक्ति को समाज में एक विशेष परिस्थिति भी प्राप्त होती है। मनुष्य की उसके जैविकीय आवश्यकताओं की पूर्ति भी होती है। मनुष्य में यौन सन्तुष्टि का आधार दैहिक ही नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक भी है। समाज के संस्थागत साधन द्वारा यौन संतुष्टि की भावना के कारण विवाह संस्था का विकास हुआ है। विवाह का शाब्दिक अर्थ, "उद्धह अर्थात बधू को वर के घर को जाना।"6

बोगार्डस का मानना है कि– "विवाह स्त्री–पुरुष के पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने की एक संस्था है।"7

भारतीय समाज में विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना गया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सांसारिक एवं धार्मिक दायित्वों को पूरा करता है। कुछ विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठानों का निर्वाह विवाहित व्यक्ति ही कर सकता है, यद्यनपि आधुनिक भारतीय समाज में विवाह से सम्बन्धित नेक परम्परागत मान्यतायें परिवर्तित हो गयी है तथापि विवाह समकालीन भारतीय समाज में व्यक्ति के सामाजिक जीवन की एक आवश्यक संस्था के रुप में अभी भी विद्यनमान है। सामाजिक सहभागिता के दृष्टिकोण से व्यक्ति के विवाहित स्थिति का स्थान महत्त्वपूर्ण है। विवाहित व्यक्ति का जीवन अत्यधिक उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन होता है अतः ऐसे व्यक्ति को सामाजिक जीवन में प्रवेश एवं सहभागिता की अनेक प्रकार की सीमाओं मर्यादाओं से परिपूर्ण होता है।

सारणी संख्या 3.8

क्र.सं.	वैवाहिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	अविवाहित	130	32.50
2	विवाहित	185	46.25

3 विधुर 45 11.25

4 परित्यक्त 40 10.00

योग 400 100.00

सारणी संख्या 3.8 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में अविवाहित उत्तरदाताओं का प्रतिशत 32.50 है जबकि विवाहित उत्तरदाताओं का प्रतिशत 46.25, विधुर 11.25 प्रतिशत हैं तथा परित्यक्त उत्तरदाताओं का प्रतिशत 10.00 है।

वर्तमान समय में कुल 400 उत्तरदाताओं में से 185 उत्तरदाताओं का वैवाहिक जीवन आज भी सप लतापूर्ण चल रहा है। शेष 45 उत्तरदाताओं जो कि विधुर है का जीवन बिना जीवन साथी के चल रहा है। सारणी के अध्ययन से यह भी स्पष्ट परिलक्षित होता है कि उत्तरदाताओं में विवाह बन्धन को पवित्र मानते हुए उसके सफल निर्वहन को ही प्राथमिकता दी है। यह भारतीय संस्कृति में निर्वहन की उचित परिस्थिति को ही दर्शाता है।

प्रश्न 6 : सामाजिक कुरीति के रुप में बाल–विवाह के प्रति उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण

सारणी संख्या 3.9

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 85 85.00 15 15.00 100

मुजार 72 72.00 28 28.00 100

छंगापुर 80 80.00 20 20.00 100

सरकी 78 78.00 22 22.00 100

योग 315 78.75 85 21.25 400

सारणी संख्या 3.9 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि बाल विवाह को सामाजिक कुरीति के रुप में मानते हैं के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 85 (85.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 15 (15.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 72 (72.0 प्रतिशत) ने हाँ उत्तर दिया और 28 (28.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 80 (80.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 20 (20.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 78 (78.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 22 (22.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 315 उत्तरदाता सामजिक कुरीति के रुप में बाल–विवाह को उचित मानते हैं जबकि 85 उत्तरदाता अनुचित।

प्रश्न 7 : बाल विवाह के प्रति उत्तरदाताओं का ़ष्टिकोण

सारणी संख्या 3.10

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 10 10.00 90 90.00 100

मुजार 15 15.00 85 85.00 100

छंगापुर 11 11.00 89 89.00 100

सरकी 12 12.00 88 88.00 100

योग 48 12.00 352 88.00 400

सारणी संख्या 3.10 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या आप बाल विवाह को उचित मानते हैं के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 10 (10.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 90 (90.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 15 (15.0 प्रतिशत) ने हाँ उत्तर दिया और 85 (85.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 11 (11.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 89 (89.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 12 (12.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 88 (88.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

प्रश्न 8 : विधवा विवाह के प्रति दृष्टिकोण

सारणी संख्या 3.11

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 88 88.00 12 12.00 100

मुजार 82 82.00 18 18.00 100

छंगापुर 80 80.00 20 20.00 100

सरकी 86 86.00 14 14.00 100

योग 336 84.00 64 16.00 400

सारणी संख्या 3.11 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या आप विधवा विवाह को उचित मानते हैं के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 88 (88.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 12 (12.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 82 (82.0 प्रतिशत) ने उचित और 18 (18.0 प्रतिशत) ने अनुचित कहा। इसी प्रकार छंगापुर में 80 (80.0 प्रतिशत) ने उचित तथा 20 (20. 0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने अनुचित बताया जबकि ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 86 (86.0 प्रतिशत) ने उचित और 14 (14.0 प्रतिशत) ने अनुचित बताया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन ने सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 336 उत्तरदाताओं का विवाह के प्रति धारणा अच्छी है जबकि 64 उत्तरदाताओं का विचार अच्छा नहीं है।

प्रश्न 9 : आधुनिक परिवेश में प्रेम विवाह के प्रति दृष्टिकोण

सारणी संख्या 3.12

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 25 25.00 75 75.00 100

मुजार 20 20.00 80 80.00 100

छंगापुर 15 15.00 85 85.00 100

सरकी 22 22.00 78 78.00 100

योग 82 20.50 318 79.50 400

सारणी संख्या 3.12 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि आधुनिक परिवेश में प्रेम विवाह को उचित मानते हैं के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 25 (25.0 प्रतिशत) ने उचित माना है तथा 75 (75.0 प्रतिशत) ने अनुचित माना है। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 20 (20.0 प्रतिशत) ने उचित और 80 (80.0 प्रतिशत) ने अनुचित कहा। इसी क्रम में छंगापुर में 15 (15.0 प्रतिशत) ने उचित तथा 85 (85.0 प्रतिशत) ने अनुचित बताया जबकि ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 22 (22.0 प्रतिशत) ने उचित और 78 (78.0 प्रतिशत) ने अनुचित बताया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन ने सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 82 उत्तरदाताओं का आधुनिक परिवेश में प्रेम विवाह के प्रति आपका अच्छा ़ष्टिकोण है जबकि 318 उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण अच्छा नहीं है।

प्रश्न 10 : विवाह के परम्परागत स्वरुप के प्रति उत्तरदाताओं का ़ष्टिकोण

सारणी संख्या 3.13

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 64 64.00 36 36.00 100

मुजार 62 62.00 38 38.00 100

छंगापुर 65 65.00 35 35.00 100

सरकी 59 59.00 41 41.00 100

योग 250 62.50 150 37.50 400

सारणी संख्या 3.13 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि विवाह के परम्परागत स्वरुप के प्रति उत्तरदाताओं का ़ष्टिकोण उचित है या अनुचित? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 64 (64.0 प्रतिशत) ने उचित बताया है तथा 36 (36. 0 प्रतिशत) ने अनुचित बताया है। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 62 (62.0 प्रतिशत) ने उचित बताया और 38 (38.0 प्रतिशत) ने अनुचित बताया। इसी क्रम में शिवदासपुर में 65 (65.0 प्रतिशत) ने उचित तथा 35 (35.0 प्रतिशत) ने अनुचित बताया। ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 59 (59.0 प्रतिशत) ने उचित और 41 (41.0 प्रतिशत) ने अनुचित बताया है।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 250 उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि विवाह के सामाजिक ़ष्टिकोण को वे उचित मानते है जबकि 150 उत्तरदाताओं ने विवाह के सामाजिक ़ष्टिकोण को उचित नहीं माना है।

प्रश्न 11 : पर्दा प्रथा के प्रति ़ष्टिकोण

सारणी संख्या 3.14

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	52	52.00	48	48.00	100
मुजार	51	51.00	49	49.00	100
छंगापुर	43	43.00	57	57.00	100
सरकी	56	56.00	44	44.00	100
योग	202	50.50	198	49.50	400

सारणी संख्या 3.14 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि पर्दा–प्रथा के प्रति आप का ृष्टिकोण क्या है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 52 (52.0 प्रतिशत) ने पर्दा–प्रथा को उचित माना है तथा 48 (48.0 प्रतिशत) ने इसको अनुचित माना है। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 51 (51.0 प्रतिशत) ने उचित माना है और 49 (49.0 प्रतिशत) ने अनुचित माना है। जबकि छंगापुर में 43 (43.0 प्रतिशत) ने उचित तथा 57 (57.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने अनुचित माना है तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने उचित और 44 (44.0 प्रतिशत) ने अनुचित माना है।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 202 उत्तरदाताओं का पर्दा–प्रथा को सामाजिक कुरीति माना है। जबकि 198 उत्तरदाताओं ने पर्दा–प्रथा को सामाजिक कुरीति नहीं मानते हैं।

प्रश्न 12 : दहेज प्रथा के प्रति विचार

सारणी संख्या 3.15

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	34	34.00	66	66.00	100
मुजार	36	36.00	64	64.00	100
छंगापुर	42	42.00	58	58.00	100
सरकी	39	39.00	61	61.00	100
योग	151	37.50	249	62.25	400

सारणी संख्या 3.15 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या आप दहेज लेना–देना उचित मानते है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 34 (34.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 66 (66.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 36 (36.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 64 (64.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 42 (42.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 58 (58.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 39 (39.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 61 (61.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर है।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 151 (37.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को दहेज लेना–देना पसन्द है जबकि 249 (62. 25 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को दहेज लेना–देना पसन्द नहीं है। इस प्रकार यह कहा

जा सकता है कि प्रतयक्ष रुप में दहेज के प्रति अधिकांश उत्तरदाताओं की धारणा है कि दहेज लेना एक सामाजिक अपराध है जबकि परोक्ष रुप से कोई इसके छोड़ना नहीं चाहता।

प्रश्न 13 : मौलिक अधिकारों के प्रति जागरुकता

सारणी संख्या 3.16

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	47	47.00	53	53.00	100
मुजार	53	53.00	47	47.00	100
छंगापुर	43	43.00	57	57.00	100
सरकी	61	61.00	39	39.00	100
योग	204	51.00	196	49.00	400

सारणी संख्या 3.16 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि मौलिक अधिकारों के प्रति क्या आप जागरुक है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 47 (47.0 प्रतिशत) की सहमति हाँ में है तथा 53 (53.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 53 (53.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 47 (47.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 43 (43.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 57 (57.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा

ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 61 (61.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 39 (39.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर है।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 204 उत्तरदाताओं को अपने मौलिक अधिकार के बारे में जानकारी है जबकि 196 उत्तरदाताओं को अपने मौलिक अधिकार के बारे में जानकारी नहीं है।

प्रश्न 14 : महिला अधिकारों के प्रति ़ष्टिकोण

सारणी संख्या 3.17

ग्राम परिवर्त्य

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	55	55.00	45	45.00	100
मुजार	52	52.00	48	48.00	100
छंगापुर	45	45.00	55	55.00	100
सरकी	56	56.00	44	44.00	100
योग	208	52.00	192	48.00	400

सारणी संख्या 3.17 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि महिला अधिकारों के प्रति आपका क्या ़ष्टिकोण है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 55 (55.0 प्रतिशत) ने उचित तथा 45 (45.0 प्रतिशत) ने अनुचित माना है। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 52 (52.0 प्रतिशत) ने उचित और 48 (48.0 प्रतिशत)

ने अनुचित माना है। इसी क्रम में ग्राम छंगापुर में 45 (45.0 प्रतिशत) ने उचित तथा 55 (55.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने अनुचित बताया जबकि ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने उचित और 44 (44.0 प्रतिशत) ने अनुचित माना है।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 208 उत्तरदाताओं का महिला अधिकारों के प्रति विचार उचित है जबकि 192 उत्तरदाताओं का महिला अधिकारों के प्रति विचार अनुचित है।

जातिगत स्थिति

भारतीय समाज में जाति का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। आदिकाल से ही भारतवर्ष में जाति प्रथा का प्रचलन रहा है। "जाति व्यवस्था भारत में अनुपम है। सामान्यतः भारत जातियों एवं सम्प्रदायों की परमपरागत स्थली माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ की हवा में भी जाति घुली हुई है और यहाँ तक कि मुसलमान तथा इसाई भी इससे अछूते नहीं बचे हैं।"8 भारतीय गाँवों में सामाजिक सम्पर्क तथा सहभागिता भोजन एवं वैवाहिक सम्बन्ध बहुत सीमा तक जाति से प्रभावित है। जाति–प्रथा सामाजिक संगठन का सामान्य रुप है, जो हिन्दू समाज को समूहों में विभक्त करता है जिसके स्तर, व्यवहार एवं आचरण में सम्यक अन्तर है। सामान्यतः भारतीय समाज में व्यक्ति के सामाजिक जीवन को प्रभावित करने में जाति एकमात्र प्रभावकारी कारक है।9 आधुनिक समाज वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि जाति–प्रथा वर्गगत ढाँचे पर आधारित एक ऐसी प्रथा है जिसमें बाध्यता भी है और गतिशीलता भी। ऐसी स्थिति में इस प्रथा में उदार भावनाओं के रहते हुए भी कुछ प्रतिबन्धों का होना अवश्यम्भावी है।10 जाति–प्रथा के अन्दर "भेदपरक भावना" एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो उसे समुदाय से अलग करती है। प्रथरता (सांस्कृतिक

खान–पान, विवाह, सहवास) का तत्त्व भी इस प्रथा में महत्त्वपूर्ण है जो इसके विकास में गति प्रदान करता है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जाति–प्रथा का पर्याप्त महत्त्वपूर्ण सथान रहा है। किन्तु अनेक महत्त्वपूर्ण व्यवस्थाएँ शिथिल पड़ती जा रही है तथा आर्थिक आधार पर व्यक्ति एवं समूह के सामाजिक स्थिति निर्धारण का महत्त्व बढ़ता जा रहा है तथापि जाति व्यवसथा आधुनिक भारतीय समाज का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्य है।11

सारणी संख्या 3.18

उत्तरदाताओं का जातीय आधार पर विवरण

क्र.सं.	जाति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	ब्राह्मण	56	14.00
2	क्षत्रिय	62	15.50
3	कायस्थ	37	9.25
4	यादव	25	6.25
5	वैश्य	35	8.75
6	मौर्य	52	13.00
7	अन्य पिछड़ी जाति	56	14.00
8	अनुसूचित जाति	77	19.25
	योग	400	100.00

सारणी संख्या 3.18 से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में जातिगत आधार पर विभाजन किया गया है जिसमें कुल 8 जातियाँ सम्मिलित है। इन 8 जातियों में सर्वाधिक 19.25 प्रतिशत भागीदारी अनुसूचित जातियों की है और सबसे कम 6.25 प्रतिशत यादव जाति की भागीदारी हैं उत्तरदाताओं में सम्मिलित सभी 400 उत्तरदाता हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। उच्च जाति समूह में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, कायस्थ सम्मिलित हैं। पिछड़ी जाति समूह के अन्तर्गत यादव, मौर्य, कुम्हार आदि को सम्मिलित किया गया हैं जबकि अनुसूचित जाति समूह के अन्तर्गत खटिक, चमार, पासी, धोबी आदि सम्मिलित हैं।

अध्ययन में सम्मिलित 38.75 प्रतिशत उत्तरदाता उच्चवर्ग से 42.00 प्रतिशत पिछड़ी जाति से तथा 19.25 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं में जाति के आधार तथा वर्ग के आधार पर भी अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति की तुलना में अपेक्षा ृ त उच्च स्थान पर है। वे उच्च–मध्यम एवं निम्न वर्ग में तुलनात्मक रुप से अधिक मात्रा में पाये गये हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित कुल 400 उत्तरदाताओं में अनुसूचित जाति का प्रतिनिधित्व सर्वाधिक है।

सन्दर्भ सूची :

1. देसाई, ए.आर., 1958 : "कास्ट सिस्टम, इन रुरल इण्डिया", (एडिटिड) सोसियालॉजी इन इण्डिया, दी इण्डियन सोसायटी ऑप एग्रीकल्चरल इर्कानामिक्स, बम्बई.

2. दुबे, एस.सी., 1958 : "इण्डियाज चेंजिंग विलेज : ह्यूमैन" पै स्टर्स इन कम्यूनिटी डेवलपमेण्ट", स्टलज एण्ड कीगनपाल.

3. देसाई, ए.आर., 1961 : "रुरल इण्डिया इन ट्रान्जीशन", पोपुलर बुक डिपो, बम्बई.

4. दुबे, एस.सी., 1967 : "इण्डियाज विलेज", हारपर एण्ड रो, न्यूयार्क.

5. देसाई, ए.आर., 1958 : "कास्ट सिस्टम, इन रुरल इण्डिया", (एडिटिड) सोसियालॉजी इन इण्डिया, दी इण्डियन सोसायटी ऑप एग्रीकल्चरल इर्कानामिक्स, बम्बई.

6. कार्वे, इरावती और डाम्ले, वाई.बी., 1963 : "ग्रुप रिलेशन्स इन ए विलेज कम्यूनिटी", वकन कालेज, पी.जी. एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना.

7. वोगार्डस, ई.एस., "सोसियोलॉजी", पृ.सं. 75.

8. बेतेई, आन्द्रे, 1966 : "कास्ट क्लास एण्ड पावर : चेंजिंग पैटर्नस ऑप स्ट्रेटीपि केशन इन ए तंजौर विलेज", ऑक्सप ोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, बम्बई.

9. धुरिए, जी.एस. 1961 : "कास्ट क्लास एण्ड औकुपेशन", पोपुलर बुक डिपो, बम्बई.

10. कोठारी, रजनी, 1970 : "कास्ट इन इण्डियन पालिटिक्स", ऑरिएण्ट लॉगमैन लिमिटेड, न्यू देहली.

11. मजूमदार, डी.एन., 1958 : "कास्ट एण्ड कम्यूनिकेशन इन एन इण्डियन विलेज", एशिया पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई.

12. पटनायक, एन. 1969 : "कास्ट एण्ड सोशल चेन्ज", नेशनल इन्स्टीट्यूशन्स ऑप कम्यूनिटी डेवलपमेण्ट, हैदराबाद.